Vol 3 Issue 9 Oct 2013 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-9, Oct-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

आलोचना के माध्यम से स्त्री

पूनम कुमारी सहरावत , संगीता
तदर्थ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, कैर, नई दिल्ली
एम.ए. हिन्दी, जे.आर.एफ., शोधार्थी, हिन्दी विभाग, म.द.वि., रोहतक

सारांश :भूमिकाः
साहित्य हमारे समाज का आईना होता है, किन्तु यह आईना जितना सीधे–सीधे हमें अपने समय व समाज की संवेदना से अवगत कराता है, उतना ही कहीं गहरे सत्ता–समीकरण भी अपने भीतर समाए रहता है। इन सत्ता समीकरणों तक पहुँचने की हमारी राह आसान बनाती है आलोचना। आलोचना के बिना न तो हम साहित्य का पूरा–पूरा आस्वासन ले पाते हैं न ही उसका गम्भीर महत्व समझ पाते हैं। अतः साहित्य आलोचना का सबसे बुनियादी काम साहित्य को विभिन्न संदर्भ प्रदान करना है। आज साहित्य–आलोचना विश्लेषण की एक बहुआयामी विधि है और ज्ञान की एक महत्वपूर्ण प्रणाली भी है। एक बिन्दु पर, वह पाठक और कृति के बीच आस्वादन और आलोचकीय विवेक का आधर तैयार करती है, तो दूसरे स्तर पर, साहित्य के सिद्धान्तों के निर्माण और निर्धारण के साथ–साथ साहित्य–इतिहास–दृष्टि की पृष्ठभूमि रचती है। किन्तु समकालीन दौर में विकसित हो रहे ज्ञान के ढाँचे (Model) के अनुरूप साहित्य–आलोचना आज अपने आप में सक्रिय राजनीतिक हस्तक्षेप का औजार भी है। आलोचना की ऐसी समकालीन और नवीन परिभाषाएँ, ज्ञान को एक निर्मिति के रूप में, निरंतर परिवर्तनशील और लगातार चलने वाली ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में देखने वाली वैचारिकियाँ ही प्रस्तुत कर रही हैं।

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य–आलोचना के संदर्भ मे स्त्रीवाद

हिन्दी साहित्य–आलोचना के संदर्भ में देखें तो यह सोचने की बात है कि हिन्दी साहित्य–आलोचना में ऐसा क्या घट गया कि कथा सम्राट प्रेमचन्द के 'गोदान' की जीवन व यथार्थ चरित्रा मानी गई 'धनिया' एकाएक मैत्रोयी पुष्पा की आलोचनात्मक जबान में जीवंत हो, अपने रचनाकार से स्व–अस्मिता पर सवाल कर उठी या 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की 'निउनियाएं', 'भट्टिनियां' आलोचना का संदर्भ बनने लगी हैं। हिन्दी साहित्य आलोचना के स्त्री लेखन और स्त्री के आत्मकथ्यों से मुंह फेरे रहने के बावजूद, आज ये विभिन्न आलोचना–प्रक्रियाओं में चर्चा–चिंता का केन्द्र बनने लगी है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण है स्त्री का साहित्य–आलोचना–कर्म के साथ कर्त्ता के रूप में सम्बन्ध स्थापित होना। साहित्य के सृजन, प्रकाशन और मूल्यांकित होने तक की तमाम साहित्यिक–प्रक्रियाओं के बीच में जब स्त्री प्रवेश करती है तो साहित्य से पारस्परिकता का संबंध रखने वाले आलोचना कर्म की परिभाषा, पद्धति और मूल्यों का स्वरूप भी बदल जाता है। यहाँ तक कि आलोचना–कर्म के कुछ नए संस्करण भी जन्म लेने लगते हैं।

स्त्रीवादी–साहित्य–आलोचना स्वयं ऐसे ही सामाजिक–वैचारिक उलट–फेरों का नतीजा है और तरीका भी। इसकी धुरी स्त्री और साहित्य के बीच मौजूद और संभावित महीन–मोटी जटिलताएँ हैं। इसलिए स्त्रीवादी–आलोचना साहित्य को विकसित और मूल्यांकित करने के साथ–साथ 'संस्कृति को आकार देने वाली ऐसी पद्धति भी है जिसमें स्त्री–पुरुष दोनों के लेखन को रखा जा सके।'1 साहित्य के माध्यम से स्त्री, विचार, भाषा, संस्कृति, इतिहास सबके सब इसके दायरे में एक साथ आते हैं। इस तरह स्त्रीवादी–आलोचना, साहित्य–आलोचना के तमाम दायित्वों के बावजूद संज्ञान, लेखन और व्यवहार को प्रभावित करने वाली सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव की बहुआयामी रणनीति और गतिविधि भी है। नतीजतन यह किसी परंपरागत साहित्य आलोचना की परिवर्तित शाखा न होकर वह स्वयं साहित्य–आलोचना में एक स्वायत्त आलोचना दृष्टि है। जो मुख्य धराई साहित्य–आलोचना के समानांतर स्त्री, साहित्य और आलोचना के बीच एकदम भिन्न कोण निर्मित करती है। विल्फर्ड गुरिन के अनुसार स्त्रीवादी आलोचना बोलने की क्रिया भाषा की सम्पन्नता को स्त्री लेखन के अध्ययन का केन्द्र बनाती है, जिन्हें प्रायः अतीत में दबा दिया गया।2 स्त्रीवादी साहित्य–आलोचना का जन्म एक स्तर पर वैश्विक परिघटना के रूप में होता है तो दूसरे स्तर पर, भारतीय सन्दर्भ में, यह हमारे अपने समाज के स्त्री–रचना–कर्म का विकासवर्ती चरण भी है, जिसका धागा भारतीय स्त्री के सामाजिक बोध से जुड़ा है। आलोचना कर्म के दायरे में गम्भीरता से स्त्री–लेखन को शामिल करना, स्त्रीवादी साहित्य–आलोचना का केन्द्रीय बिन्दु है, जिसकी राह स्त्री–लेखन के विश्लेषण के लिए एकदम नए और उपयोगी आलोचकीय मानदण्डों की खोज करना है। लुईस टाइसन के अनुसार स्त्रीवादी आलोचक ऐसे तरीकों की खोज करती हैं, जिनमें साहित्य और अन्य सांस्कृतिक निर्मितियों के माध्यम से स्त्री के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और मानसिक उत्पीड़न की पड़ताल की जा सके।[3] वह पुरुष रचना को स्त्री की सामाजिक–सांस्कृतिक निर्मिति और स्त्री–अनुभव के संदर्भ में देखना हो या साहित्यिक–पाठ में उभरती छवि को आस्वादन से भी आगे बढ़कर व्याख्यायित करना एक स्तर पर रचनाकार को अपने अनुभव और दृष्टिकोण को एक पाठकीय संवेदना में सार्वभौमिक बोध बनकर उभरने की प्रक्रिया का प्रत्यक्षीकरण कराना हो, कहीं न कहीं ये सब कड़ी–कड़ी जुड़कर स्त्री के उत्पीड़न में साहित्य के हाथ शामिल होने को स्पष्ट करते हैं। विलफर्ड गुरिन के अनुसार स्त्री आलोचना मौजूदा सस्कृति में जेण्डर के रूप में निहित सत्ता असंतुलन को व्यक्त करती है, और साहित्य में इसके प्रतिबिम्बित तथा साहित्य द्वारा इसको चुनौती देने का प्रयास करती है।[4] स्त्रियों के लिए उनका रचना–कर्म एक प्रकार से अपने अनुभव और सृजन से सम्भव आत्मबोध की एक प्रक्रिया है, साथ में व्यापक समाज के साथ एक प्रकार से स्त्री के 'एक्सपोजर' का महत्वपूर्ण माध्यम भी है। इस प्रकार स्त्री, साहित्य के भीतर और साहित्य के बाहर भी अनेक व्यक्तिगत और सामाजिक प्रक्रियाओं की द्वंद्वात्मकता से प्रभावित ईकाई के रूप में सामने आने लगती है। स्त्री–अस्मिता को स्त्री की वैयक्तिकता के साथ–साथ उसे स्त्री जाति की सामूहिक–अस्मिता से जोड़कर, स्त्री–मुक्ति के व्यापक लक्ष्य से जोड़ना, आलोचना के जरिए साहित्य में नए स्पेस निर्मित करने जैसा है। इसीलिए साहित्य में चित्रित स्त्री और स्त्री रचनाकर्म के विश्लेषण का आधार, पूर्व स्थापित व्यवस्था के मूल्यों व आदर्शों से तुलना की बजाय, उनका स्वयं स्त्री से बनने वाला सम्बन्ध हो जाता है। इस दृष्टि से साहित्य को देखने पर, न सिर्फ साहित्य में स्त्री–संदर्भ विकसित होने लगता है, बल्कि स्त्री भी अपने सभी आयामों को पाने लगती है। इसीलिए साहित्य में चित्रित अंतरंगता के प्रसंग भी सीधे यौनिकता के नए संदर्भों से जुड़ जाते हैं। इस संदर्भ में साहित्य–आलोचना में स्त्री–संदर्भ का विकास ही स्त्री के लिए शक्ति का एक स्रोत बन जाता है। साहित्य में रचित स्त्री, स्त्री के लिए शक्ति का एक स्रोत बन जाता है। साहित्य में रचित स्त्री के व्यवहार, सोच और निर्णयों में स्त्री के स्व प्रतिनिधित्व के संकेत पाना, स्त्री के मानवीय और पारस्परिक व्यवहार को स्त्री–प्रतिनिधित्व के संकेत पाना, स्त्री के मानवीय और पारस्परिक व्यवहार को स्त्री–संस्कृति का आयाम देना, स्त्री–साहित्य–भाषा को लैंगिक वर्चस्व के राजनीतिक विमर्श में जोड़ने सम्बन्धी व्याख्याएं और निष्कर्ष इसी शक्तिकूप के फल हैं जो ना तो परंपरागत आलोचना से सध, न ही ये उनकी चिंताएँ रहीं, इसलिए वहां स्त्री–लेखन सम्बन्धी मूकता और बधिरता छाई रही।

स्त्रीवादी–साहित्य–आलोचना का मूल चरित्र स्त्री की बदलती चेतना और स्त्रीवादी वैचारिकी और समकालीन स्त्री–लेखन की प्रकृति पर खड़ा है। रस से ज्यादा अनुभव की प्रामाणिकता, कलात्मकता बनाम स्वानुभूति, स्त्री के यथार्थ से कटे बिम्बों के बरक्स सचेत अस्मिता बोध पर बल, ये सभी साहित्यिक–घटक अपने लिए परंपरागत आलोचना–दृष्टि से भिन्न आलोचना–दृष्टि की मांग करते हैं। स्त्री–लेखन के इस तेवर की भाँति ही स्त्रीवादी आलोचना दृष्टि साहित्य और

समाज को स्त्री मुक्ति के परिप्रेक्ष्य से जोड़कर देखती है तो साहित्य और संस्कृति भी उनके लिए 'राजनीतिक कर्म' हो जाता है और दमन की सामाजिक–सांस्कृतिक अवधरणाओं को चुनौती देने वाला क्रान्तिकारी माध्यम भी। ऐसे में आलोचना भी लिखित पाठ से ज्यादा मूल्य–परिवर्तन की एक प्रक्रिया बन जाती है और ऐसी आलोचना–दृष्टि स्वयं आलोचना कर्म की आलोचना के रूप में सामने आती है। व्यक्ति केन्द्रीयता और एकछत्रा सार्वभौमिकता के बरस एक जनतांत्रिाक और बहुलतापूर्ण प्रतिनिधित्व का सामने आना, ऐसी ही आलोचना–दृष्टियों का परिणाम है। 'स्त्री आलोचना साहित्य को सामाजिक, आर्थिक और भाषिक जटिलताओं का ही अंशै' मानती है। इसके अनुसार स्त्री के उत्पीड़न और अमानवीकरण में लिप्त साहित्यिक 'मिथक' आर्थिक व्यवस्था जितने ही शक्तिशाली है। अतः इस कोण पर साहित्य, समाज और भाषा तीनों एक–दूसरे को प्रतिबिम्बित और एक–दूसरे की परिकल्पना को नियंत्रित करने की हद तक प्रभावित करने के सूत्र में खड़े दिखाई देते हैं। इसीलिए परंपरागत साहित्य और भाषा को भी परंपरागत समाज के अनुरूप पुरुष केन्द्रित घोषित किया गया। वास्तव में परंपरागत साहित्य, गैर बराबर शक्ति के सम्बन्धें के बीच और उन्हीं पर टिका साहित्य है। वह स्त्री को एक साथ वैचारिक (छवि, मिथ, विमर्श), सामाजिक (पितृसत्ताक मूल्यों और सम्बन्धें की दृष्टि), भाषिक (सब्जेक्ट बनाम स्त्री–ऑब्जेक्टिपिफकेशन की संरचना) स्तर पर निष्क्रिय करता रहा है। यहां साहित्य अपने सृजनकर्ता से प्रभावित हो स्त्री के सांस्कृतिक और वैचारिक 'बंध्याकरण' की प्रक्रिया बन जाता है। साहित्य और आलोचना का ऐसा स्वरूप स्त्री को सृजन और प्रतिनिधित्व की निर्मितियों में हस्तक्षेप से रोकता है। इसीलिए स्त्रीवादी, साहित्य–आलोचना साहित्य के माध्यम से विचार, भाषा, संस्कृति तीनों स्तरों पर एक साथ स्त्री अस्मिता के विकास की पक्षधर है। स्त्रीवादी–साहित्य–आलोचना द्वारा स्त्री–मुक्ति परिप्रेक्ष्य को पठंत और लिखंत की नई पद्धतियों में जोड़ना, स्त्री लेखन को उसकी वास्तविक महत्ता और मूल्यांकन की ओर ले जाने वाला ऐसा ही कदम है। लिसा टटल स्त्री आलोचना के उद्देश्य के बारे में लिखती हैं स्त्रीवादी आलोचना का उद्देश्य–स्त्री लेखन में प्रयोग किए गए प्रतीकों को व्यवस्थित करना, ताकि वह पुरुषवादी दृष्टिकोण के कारण उपेक्षित और लुप्त न हो सके या स्त्री के नजरिये से लेखिकाओं का विश्लेषण करना, साहित्य में लैंगीकरण का विरोध करना। भाषा तथा शैली की लैंगिक राजनीति के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।' साहित्य की अंतर्वस्तु, संरचना और भाषा से स्त्री का संबंध, साहित्य की रचना–प्रक्रिया और स्त्री, साहित्यिक पठंत पर पाठक व रचनाकार की लैंगिक स्थिति का प्रभाव आदि स्त्रीवादी–साहित्य–आलोचना का प्रमुख घटक है। पाठ, पाठक, रचनाकार और उनकी लैंगिक–सामाजिक स्थिति की आपसी द्वंद्वात्मकता के आधर पर ही स्त्रीवादी 'पठंत' का निर्माण होता है। हिन्दी–स्त्रीवादी आलोचना के शुरूआती दौर में साहित्यिक पाठ को एक नियंत्राणकारी शक्ति के रूप में स्त्री के स्त्रीकरण को बढ़ावा देने वाला माना गया। लेकिन यह एक प्रकार से पुरुषवादी साहित्य के अध्ययन पर केन्द्रित 'पठंत' की स्थिति थी। इस स्थिति में मुख्य–मुख्य स्त्रीवादी रचनाकारों के साथ–साथ स्त्रीवादी पुरुष आलोचकों ने मिलकर साहित्य–प्रक्रियाओं में निहित स्त्री के परिधिकरण को सामने लाने पर बल दिया। आलोचना की स्त्री परिप्रेक्ष्य में आलोचना और स्त्री लेखन के प्रति स्पष्ट नकार और हुंकार के मुद्दे सभी इसी दौर में सामने आए।

कुछ समय बाद आलोचना की उपरोक्त पद्धति स्त्री की साहित्यिक 'पॉजिशन' के आधर पर 'पठंत' और 'लिखंत' के नए तरीकों की ओर मुड़ गई। इसमें पुरुष रचनाकारों के स्त्री–विषयक पाठों का पुनर्पाठ शामिल था। लिसा टटल के अनुसार पुराने 'पाठ के प्रति नए सवाल पूछनें' है। स्त्री रचनाकारों ने अपने आलोचनात्मक कर्म के जरिए साहित्यिक स्त्री–पात्र (चरित्रों) को पुरुष रचित पाठ की नियंत्राणता से मुक्त कर सीधे पाठ के सामाजिक विमर्श से जोड़ दिया। ऐसे में स्त्री–आलोचना की 'पठंत' की यह पद्धति पुनर्पाठ से एक स्त्रीवादी पुनर्रचना में बदल जाती है। इसी आलोचना दृष्टि के आधर पर हिन्दी साहित्य परंपरा की महानतम कृतियों और साहित्यिक युग या काल आदि में परिकल्पित स्त्री चरित्रों पर बहस उठती रही। इन सबका स्रोत या बीज स्त्रीवादी साहित्य–आलोचना दृष्टि ही रही, जिसने स्त्री–मुक्ति के प्रश्न को तमाम सामाजिक–सांस्कृतिक माध्यमों के स्तर पर स्थापित किया। स्त्रीवादी–साहित्य–आलोचना दृष्टि आलोचनात्मक पाठ को किसी भी विषयपरक 'पठंत' की क्रिया की बजाय समाज और साहित्य में 'भिन्न प्रकृति के शब्दों, अनेक छवियों, विचारों के समूह को'[8] और 'पाठ को संचालित और संरक्षित करनेवाले भिन्न सिद्धान्तों को' 'रास्ता' देने का माध्यम मानती है। स्त्री–आलोचना पाठ और पाठक की चेतना के संबंध पर गंभीरता और अनेक दृष्टि–विशेष को साथ लेकर सोचती है। जुडिथ फैटरले के अनुसार– स्त्रीवादी आलोचना एक राजनीतिक कर्म है जिसका उद्देश्य केवल दुनिया व्याख्यायित करना नहीं है, बल्कि इसे पढने वालों की चेतना और वे, जिन्हें पढ़ रहे हैं उनसे उनके सम्बन्धें को बदलना भी है। यहाँ स्त्री सार्वभौमिक होकर भी अपने समुदाय की विशिष्टताओं के कारण दूसरी स्त्री से भिन्न निर्मिति में जीती है, इसलिए स्त्री–आलोचना में पाठक भी उनकी अनेक श्रेणियों के साथ और उसके 'प्रभाव' से 'पाठ' के आलोचनात्मक अर्थ में आए बदलावों को भी महत्वपूर्ण मानती है। पाठ की व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं है। 'कुलर' के अनुसार 'जब वे (पाठक) किताब पढ़ चुके होते हैं तो किताब का उनका अनुभव, ज्ञान में बदलने लगता है, भले ही वे (पाठक) किताब को पढ़ चुकने के बाद उसे अपने पाठकीय अनुभव से बाहर कर दें[9]।' पाठ की ऐसी समझ और पाठ की शक्तिमत्ता के मद्देनजर ही स्त्रीवादी–आलोचना केवल साहित्य नहीं, साहित्येतिहास, समाजशास्त्रीय दृष्टि, मनोविज्ञान, व्यवसाय, मीडिया आदि तक के अंतःसम्बन्धों तक फैल चुकी है।

निष्कर्ष :

स्त्रीवादी साहित्य आलोचना ने कर्म को साहित्य के साथ–साथ पहली बार 'जेंडर' और 'पॉलिटिक्स' से मिलाकर आलोचनात्मक अर्थ निर्माण के ढाँचों को ही बदल दिया है। यहाँ आलोचना और साहित्य अपने निर्धारित कर्म के साथ–साथ स्त्री द्वारा राजनीतिक–सामाजिक संघर्ष का महत्वपूर्ण हथियार बन गया है। इसलिए स्त्रीवादी आलोचना दृष्टि के साथ जब भी स्त्री आलोचक की भूमिका में आती है वह एक सामाजिक–सांस्कृतिक 'कैटगरी' के रूप में सक्रिय हो जाती है और पाठ की संरचना में 'पैसिव' स्त्री को भी सक्रिय कर देती है। हिन्दी साहित्य इतिहास में पैसिव कर दिए गए स्त्री लेखन पर और अज्ञात के ज्ञापन पर बल दिए जाने का कारण भी यही है। अतः स्त्रीवादी आलोचना ने अपने व्यापक फलक पर न केवल ज्ञान और साहित्य में पुरुषवादी अर्थ की सार्वभौमिकता को तोड़ा है बल्कि सृजन की व्यवस्थाओं में एकध्रुवीय लैंगिकता को भी झकझोरा है। अतः स्त्रीवादी आलोचना दृष्टि न केवल भाषा की व्यवस्था में स्त्री के स्थापित होते जाने की सुखद स्थिति की ओर इशारा करती है, बल्कि वह प्रत्येक साहित्य–आलोचनाओं में लोकतंत्रीकरण के एक मोड़ के रूप में भी नजर आती है।

संदर्भ व टिप्पणियाँ:

1.न्युटिन, जुडिथ और डेबोरह (सम्पादन), फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म एंड सोशल चेंज, टेलर एण्ड फ्रेंसिस रूटलेज, युनाइटेड किंगडम, 1985, पृ. 20
2.गुरिन, विल्फर्ड, ए हैण्डबुक ऑफ क्रिटिकल अप्रोच टू लिटरेचर, न्यूयॉर्क, आक्सफोर्ड यू.पी. 1999, पृ. 77
3.टाइसन, लुईस, क्रिटिकल थीयरी टुडे ए यूजर फ्रैण्डली गाइड, रूटलेज, टेलर एण्ड फ्रेंसिस ग्रुप, न्यूयॉर्क लंदन, 2006, पृ. 81
4.गुरिन, विल्फर्ड, ए हैण्डबुक ऑपफ क्रिटिकल अप्रोच टू लिटरेचर, न्यूयॉर्क, आक्सफोर्ड यू.पी. 1999, पृ. 78
5.न्युटिन, जुडिथ और डेबोरह (सम्पादन), फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म एंड सोशल चेंज, टेलर एण्ड फ्रेंसिस, रूटलेज, युनाइटेड किंगडम, 1985, पृ. 21
6.टटल, लिसा, एन्साइक्लोपीडिया ऑफ फैमिनिज्म, लॉगमैन, हारलॉव, 1986, पृ. 184
7.वही, पृ. 184
8.न्युटिन, जुडिथ और डेबोरह (सम्पादन), फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म एंड सोशल चेंज, टेलर एण्ड फ्रेंसिस, रूटलेज, युनाइटेड किंगडम, 1985, पृ. 21
9.जुडिथ, फैटरले, 'द रेजिस्टिंग रीडर : ए फेमिनिस्ट एप्रोच टू अमेरिकन फिक्शन', ब्लूमिंगटन, इन्डियाना यूनिवर्सिटी प्रैस, 1978, पृ. 37
10.वॉल्टर, एलेन (सम्पादन), स्पीकिंग ऑफ जेंडर, रूटलेज, युनाइटेड किंगडम, 1989, पृ. 47

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net